अधिकरण कारक

आधारोऽधिकरणम् ।सप्तम्यधिकरणे च ।

जिस स्थान पर कोई कार्य होता है उसे अधिकरण कहते हैं और वह सप्तमी विभक्ति में रखा जाता है, यथा-स्थाल्यामोदनं पचति (बटली में खाना पकाता है)।

आसने उपविशति (आसन पर बैठता है)।

आधार तीन प्रकार का होता है-(१)औपश्लेषिक, (२) वैषयिक तथा (३) अभिव्यापक।

(१) औपश्लेषिक आधार-जिसके साथ आधेय का भौतिक संश्लेष हो. यथा-कटे आस्ते (चटाई पर है), यहाँ बैठने वाले का भौतिक संश्लेष स्पष्ट दिखाई देता है।

(२) वैषयिक आधार-जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक संश्लेष हो, यथा-मोक्षे इच्छास्ति । यहाँ इच्छा का 'मोक्ष' में अधिष्ठित होना पाया जाता है।

(३) अभिव्यापक आधार-जिसके साथ आधेय का व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध हो, यथा-तिलेषु तैलम् । यहाँ तेल सभी तिलों में व्याप्त है।

त्तस्येन्विषयस्य कर्मण्युपसंख्यानम वा०

क्तप्रत्ययांत शब्द में इन् प्रत्यय लगकर बने हुए शब्द के योग में उसके कर्म में सप्तमी होती है, यथा-

अधीती चतुर्ष्वाम्नायेषु (चारों वेदों को पढ़ चुकने वाला)।

गृहीती षट्स्वंगेषु (छहों अंगों का प्रकाण्ड विद्वान्)।

साध्वसाधु प्रयोगे च वा०

साधु और असाधु के प्रयोग में सप्तमी विभक्ति होती है, यथा-

मातरि साधुरसाधु वा (अपनी माता के प्रति सदव्यवहार अथवा असद् व्यवहार करता है।)

निमित्तात्कर्मयोगे वा०

जिस फल की प्राप्ति के लिए कोई क्रिया की जाती है, वह फल यदि उस क्रिया के कर्म से युक्त हो तो उसमें सप्तमी होती है, यथा

चर्मणि द्वीपिन हन्ति दन्तयोरहन्ति कुञ्जस्म् ।

केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हतः ।।

यहाँ 'द्वीपी' कर्म के साथ उसका चर्म फल प्राप्ति है, उसी के लिए हत्या की जाती है । इसी प्रकार दन्तयोः, केशेषु तथा सीम्नि में भी सप्तमी हुई।

यतश्च निर्धारणम्

जब किसी वस्तु की अपने समुदाय से किसी विशेषण द्वारा कोई विशिष्टता दिखलायी जाती है तब समुदाय वाचक शब्द षष्ठी अथवा सप्तमी में रखा जाता है, यथा

कवीनां कविषु वा कालिदासः श्रेष्ठः ।

छात्राणां छात्रेषु वा गोविन्दः पटुतमः ।

जीवेषु जीवानां वा मानवाः श्रेष्ठाः।